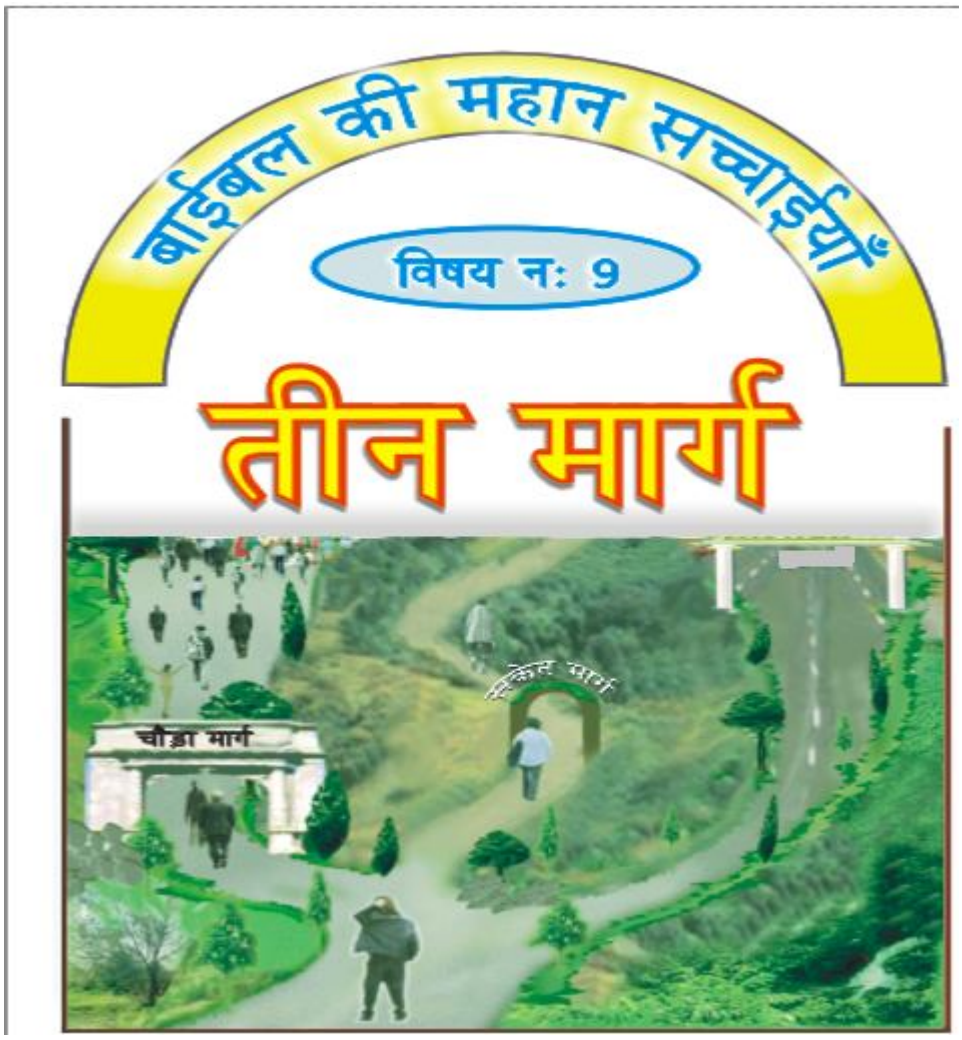

कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।

ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।

आज हम बाइबल में से "तीन मार्गों" के विषय के बारे में पढ़ेंगे।

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

आमतौर पर हमने "**दो मार्गों**" के बारे में **सुना** है लेकिन ये तीसरा मार्ग क्या है, इसके लिये आप हैरान हो रहे होंगे?

आज इस पाठ में हम देखेंगे और इस तीसरे मार्ग को भी समझेंगे!

आइये पहले हम देखते हैं इन दो मार्गों को जिनके बारे में आपने पहले भी सुना है।

मत्ती (Mathew) 7:13, 14 "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुत से हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है; और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं॥"

यीशु बताते हैं:-

एक **चौड़ा मार्ग** है जिसका **फाटक चौड़ा** है

"जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुत से हैं जो उससे प्रवेश करते हैं "।

और …

एक सकेत मार्ग है जिसका **फाटक सकरा** है

"जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं"

क्या है ये **दो मार्ग?**

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

पारम्परिक तौर पर ये दो मार्ग **स्वर्ग** और **नर्क** की ओर ले जाने वाले माने जाते हैं!!

क्या ऐसा है? याद रखें कि ये शब्द द्वारा बोले गये हैं!

आइये अब हम यीशु के **वचनों** के बारे में कुछ पढ़ें –

मत्ती (Mathew) 13:34 "ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं, और बिना दृष्टान्त वह उनसे कुछ न कहता था।"

जी हाँ! हमें अवश्य ये याद रखना चाहिए कि यीशु **हमेशा दृष्टान्तों में बात करते थे** .....

39 दृष्टान्तों या छोटी कहानियों के अलावा

उन्होंने **दूसरे दृष्टान्त वाले वाक्य** भी बोले।

इस प्रकार से यहाँ भी "**मार्गों**" शब्द के लिये दृष्टान्तिक भाषा का उपयोग किया गया है।

उनका मतलब क्या है?

इसे हम **एक उदाहरण या चित्रण** के द्वारा समझेंगे।

जब एक युवा लड़का या लड़की गलत गतिविधियों में शामिल हो जाता हैं और स्वच्छंद हो जाते हैं, उसके माता पिता उसे बुलाकर इस तरह के सवाल पूछते हैं कि

- "किस मार्ग की ओर तुम्हारा जीवन जा रहा है?"

इसका मतलब क्या है?

यह किसी के द्वारा लिये गये **जीवन पथ** का उल्लेख करता है!

जी हाँ! यीशु भी यहां अपने दिनों में उपलब्ध जीवन के दो विकल्पों का उल्लेख कर रहे हैं ।

एक चौड़ा मार्ग ..... और एक सकेत मार्ग!

यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि यहाँ किसी स्वर्ग या नरक के जैसे गंतव्य का उल्लेख नहीं किया गया है।

हम पढ़ते हैं कि एक **"विनाश"** की ओर तथा दूसरा **"जीवन"** की ओर लेकर जाता है।

इसका मतलब क्या है?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इस **"विनाश"** और इस **"जीवन"** का क्या अभिप्राय है?
उत्तर पाने के लिये हमें विस्तार से इन मार्गों के बारे में अध्ययन करना चाहिए!

पहला मार्ग

चौड़ा मार्ग

आइए अब हम मत्ती 7:13 वचन को पढ़ते हु एचौड़े मार्ग का अध्ययन करें -

मत्ती (Mathew) 7:13 "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुत से हैं जो उस से प्रवेश करते हैं"।

इस "**चौड़े मार्ग**" का क्या अभिप्राय है?
और इस **"विनाश"** का क्या अभिप्राय है?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

हम यह भी पढ़ते हैं कि "बहुत से हैं जो उससे प्रवेश करते हैं"

ऐसा लगता है कि यही वो मार्ग है जिसपर दुनिया के अधिकांश लोग चल रहे हैं!!

यह कौन सा मार्ग है?

इस मार्ग के बारे में हम फिर से नीतिवचन 14:12 में पढ़ते हैं –

नीतिवचन (Proverbs) 14:12 "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।"

जी हाँ! जीवन पथ या **मार्ग** जो मानवजाती की दुनिया ले रही है, अभी उन्हें **"ठीक जान पड़ती"** है.....

..... लेकिन हम पढ़ते हैं कि इसके **अन्त** में **"मृत्यु ही मिलती है"**।

यह **किस तरह** का "मार्ग "होगा जिसका अन्त "मृत्यु के मार्ग" में होगा?

इसका उत्तर हमें बाइबल में स्पष्ट रूप से लिखा मिलता है जिसे हम इस वचन में पढ़ते हैं –

रोमियों (Romans) 6:23 "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥"

जी हाँ! हम जानते हैं की मृत्यु पाप का फल या परिणाम है।

इसीलिए यह मार्ग अवश्य पाप का मार्ग होगा!

और हाँ! **मृत्यु** ही वो **विनाश** है जिसका उल्लेख यहाँ पर किया गया था!

इसके बारे में यूँही सोचें!

हमारी दुनिया और जीवन में हम अपने चारों ओर बहुतसी बर्बादी देखते हैं--

व्यापार का हानि या दिवालियापन के द्वारा **नष्ट** हो जाना ।

घर या ईमारत का आग या प्राकृतिक आपदा के द्वारा **नष्ट** हो जाना ।

झगड़े, जलन आदि के द्वारा **मित्रता का टूट** जाना ।

नगरों/देशों का विपत्तियों के द्वारा **विनाश** जैसे कि सुनामी, युद्ध, भूकम्प, बवंडर आदि ।

तलाक के द्वारा **शादी का टूट** जाना।

शारीर का बिमारियों, दुर्घटनाओं आदि के द्वारा **नष्ट** होना।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इन सभी विनाशों को सही हालत में फिर से लाने का एक तरीका है, लेकिन एक प्रकार का विनाश ऐसा है जो की …..**अंतिम** है और वह है..... **मृत्यु**।

जी हाँ! मौत सबसे **भयंकर** विनाश है!!!

आप सभी ने कभी न कभी अपने जीवन में किसी के आन्तिम संस्कार में हिस्सा लिया होगा!

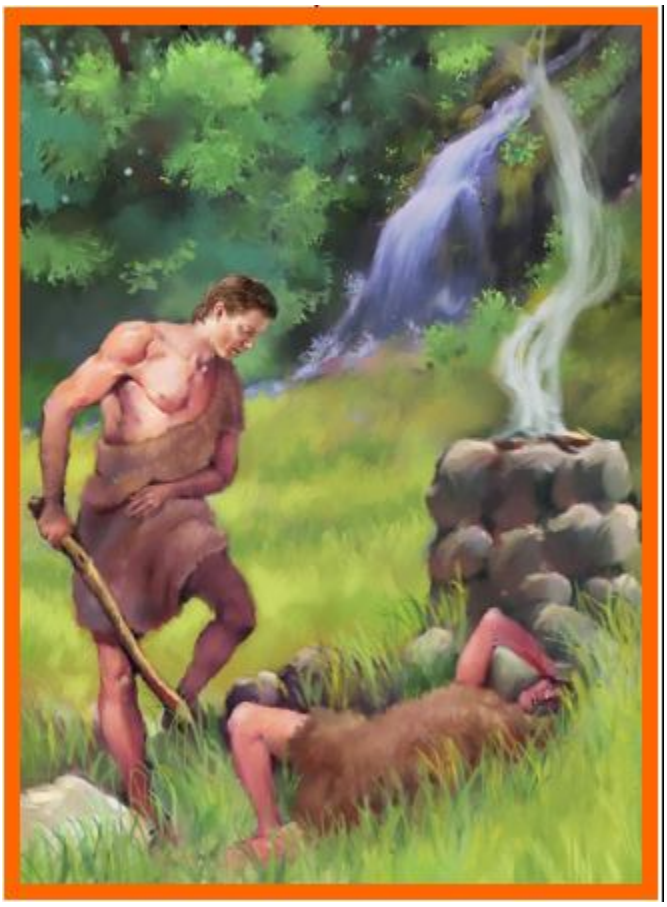

क्या सभी अंतिम संस्कारों में की **अत्यन्त लाचारी** और **भीषण हानि की भावना** आपको याद है?

जी हाँ! मानवजाति की **प्रथम मृत्यु** में भी ऐसा ही था।

यूँही आप अपनी आंखें बंद करके जरा कल्पना करें कि वह कैसा रहा होगा!

केन, ने जब यह महसूस किया होगा कि उसने आबेल के साथ कुछ भयंकर किया है और जब उसने सब ओर खून ही खून देखा होगा, तो वह भाग गया होगा और खुद को अपने माता - पिता और सम्भवतः कुछ छोटी बहनों से छिपा लिया होगा।

जैसे जैसे समय बिता और बच्चे घर लौटकर नहीं आए, आदम और हव्वा **परेशान** और **चिंतित** हो गए होंगे, वे उनकी खोज में गए होंगे और धीरे- धीरे उन्हें पता चला होगा कि आबेल **जाहिर तौर पर सो** रहा था और खून बह रहा था।

उन्होंने हल्के हाथ से आबेल को हिलाकर जगाने की कोशिश की होगी और जब कोई प्रतिक्रिया न मिली होगी, सम्भवतः हव्वा ने आदम से कहा होगा -

"मैंने आबेल को इतनी गहरी नींद में सोते कभी नहीं देखा"

और जैसे समय बीतता गया और आबेल सोता रहा और धीरे धीरे उसका शरीर बदलता रहा और कड़ा हो गया, आदम को यह **विचार** आया होगा कि उसका बेटा **आबेल मर चूका है**!

और यही वह बात थी जिसके बारे मैं प्रभु परमेश्वर ने कहा था कि तुम निश्चय मरोगे!!

और कोई भी यह कल्पना कर सकता है कि उस दृश्य में आदम और हव्वा और उनके छोटे से परिवार में

…. **पृथ्वी के प्रथम अंतिम संस्कार!!**

के समय क्या **दुःख और विलाप** का सैलाब टूट कर निकला होगा!

जी हाँ! सचमुच में! यही वो **पाप** और **मृत्यु** का "**मार्ग**" है जो वहां से शुरू हुआ और जिस पर पूरी **मानवजाति** की दुनिया के लोग अब चल रहे हैं!

यह चौड़ा मार्ग है जो की "मृत्यु के मार्गों" या "विनाश" की ओर ले जाता है

जी हाँ! **संसार के करोड़ों लोग इस मार्ग** पर चलते हैं, जैसा कि हम मत्ती 7:13 वचन में पढ़ते हैं - "बहुत से हैं जो उससे प्रवेश करते हैं …"

यह पाप का **चौड़ा मार्ग वंशागत अवस्था है** जिसे कोई जन्म से ही पाता है, जैसा कि हम भजन संहिता 51:5 में पढ़ते हैं -

भजन संहिता (Psalms) 51:5 "देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा॥"

बहुतों ने इस वचन की गहराई को न समझकर यह सोचा है कि भजन संहिता लिखने वाले दाऊद राजा केवल अपने ही बारे में बात कर रहे हैं!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

लेकिन ऐसा नहीं है!

क्योंकि हम बहुत ही स्पष्ट रूप से रोमियो 5:12 वचन में पढ़ते हैं -

रोमियो (Romans) 5:12 "इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया।"

यहाँ पर यह! कितना स्पष्ट है!

यह "मृत्यु" और "पाप की अवस्था" ... **गर्भ - धारण से** ही सभी मनुष्यों में फ़ैल गयी!

..... माँ की कोख में से ही!!!

जी हाँ! दाऊद ने हमें इस <u>महान सच्चाई</u> का बहुत स्पष्ट रूप से वर्णन किया है!

जी हाँ! वह "एक मनुष्य" **आदम** था जिसने **पहले** पहल पाप के "फीते को काटा" और इस मार्ग में प्रवेश करके चलने लगा।

उसे इस मार्ग के अंत (मृत्यु - विनाश) तक चलकर आने में 930 वर्ष **(उत्पत्ति 5:5)** लगे, लेकिन **आज** यह सफर बहुत शीघ्र ही पूरा हो जाता है - **80 सालों / 60 सालों या फिर 30 ही सालों में!**

ऐसा क्यों है?

क्योंकि लगभग 60 सदियों या 6000 वर्षों से और उसके बाद भी बहुतसे लोगों के उस "**मार्ग**" पर चलने के कारण यह मार्ग ... "**चिकना**" **(मतलब पाप करना आसान)** हो गया है और कोई भी इसपर आसानी से .... "**फिसल**" **(सहजता से और अपने आप)** सकता है **और इस** प्रकार से अति शीघ्र अंत तक पहुँचसकता है।

क्योंकि पाप करना मनुष्य के लिये इतना स्वाभाविक हो गया है और पाप करना सही करने से ज्यादा आसान हो गया है!

पाप <u>मनुष्य के खून और वंशाणु</u> (Gene) में ही प्रवेश कर गया है।

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

जी हाँ! पाप इस हद तक बढ़ गया है ....और मानवजाति ने पूरी तरह से धार्मिकता की दृष्टि को खो दिया है ....कि यह लिखा है -

नीतिवचन (Proverbs) 14:12 "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है"।

जी हाँ! क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं?

आज **पाप** के मार्ग **ठीक** लगते हैं और मनुष्य की नजर में **अच्छे से स्वीकृति** प्राप्त हैं! इस तथ्य की **गहराई** को बेहतर समझने के लिए आइये हम मानव जाति में आम तौर पर किये गए पाप के तरीकों के कुछ उदाहरण देखते हैं–

यह **इस बात को बोलना है जो सच नहीं है** या जो **असत्य** और **झूठी** है।

ऐसा कहा जाता है कि हम एक दिन में आमतौर पर 250 झूठ बोलते हैं! यह एक आश्चर्यजनक बात लगती है लेकिन आइये हम झूठ बोलने के तरीकों की जांच करें।

अभिवादन और इसके उत्तर में बोलने वाले झूठ, जैसे कि अगर कोई पूछे **"तुम कैसे हो?"**

तो बीमार या दुखी होने पर भी अपने आप यह कहना - "मैं ठीक हूँ"!!

व्यापार में या कार्यालय में कीमतों के बारे में या सामान पहुँचाने के बारे में या समय से सम्बंधित आदि बातचीत के समय बोलने वाले झूठ।

घर में या दूसरों के यहाँ भोजन परोसने पर उसके स्वाद से सम्बंधित बोले गए झूठ!

हो सकता है कि उस भोजन से आपको संतुष्टि न मिली हो फिर भी ये पूछे जाने पर की **"भोजन कैसा लगा"** - यह कहना की **"अत्यन्त स्वादिष्ट है! आपको इसे बनाने का तरीका कहाँ से मिला? क्या आप मुझे भी देंगे?**

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

बच्चों से अपनी बात मनवाने के लिए झूठे काल्पनिक डरावने प्राणियों की बात करना - जैसे "बूगिमैन", आदि!

छोटी-छोटी बातों पर बोलनेवाले झूठ को **"सफेद"** झूठ होने का दावा करना और यह मानना की परमेश्वर सिर्फ गंभीर मामलों पर बोले गए **"काले"** झूठ से नाखुश होते हैं।

यहाँ तक की हम झूठ बोलकर --**"सचमुच"** भी कहते हैं!

तो फिर यहाँ पर **"असली झूठ"! (Real Lies)** - **"सच्चे झूठ"! (True Lies)** हैं।

अंग्रेजी की एक पिक्चर का शीर्षक था - **"सच्चे झूठ"! (True Lies)** - जरा कल्पना करें!

जी हाँ! झूठ और झूठ बोलना इस तरह से **लोगों के खून में समां गया है** ....

...कि वे सहजता से झूठ बोलते हैं!

सच बोलना अभी के समय में कितना..... कितना ज़्यादा मुश्किल हो गया है!!

आइये हम एक और पाप के बारे में देखें -

झूठी निंदा / चुगली करना

अर्थात् दूसरों के व्यवहार या चरित्र और उनके कामों के बारे में खुले तौर पर और सार्वजनिक रूप से
पड़ोसियों या पत्रिकाओं के माध्यम से, किटी पार्टी आदि के द्वारा बातचीत करना।

अन्य लोगों के जीवन और उनकी "कमजोरियों" और उनके कार्यों की चर्चा करना **"मजेदार"** माना जाता है।

इसे .... **"टाइम पास"** कहा जाता है!!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

यह हमेशा एक अन्य व्यक्ति कीमत पर किया जाता है! झूठी निंदा करनेवाला या चुगली करनेवाला ये **कभी भी न सह पायेगा** की कोई उसके बारे में ऐसी बात करे।

चरित्र हनन या चरित्र "हत्या" का यह गंभीर मामला बहुत हल्के ढंग से लिया जाता है और यह **आनंद** का और यहां तक कि... **मनोरंजन** का मामला बन गया है!

आइये हम एक और बहुत बड़े पाप के बारे में देखें -

स्वार्थ

यह ऐसी अवस्था है जिसमें कोई दैनिक जीवन की सभी स्थितियों में सिर्फ अपने बारे में **सोचता** है या **व्यवहार** करता है या **"खुद"** की **बड़ाई** करता है।

रोजमर्रा की जिंदगी में इसका प्रदर्शन होता है, जैसे -

... **घर** पर और परिवार के बीच.... घरेलू उपकरणों के उपयोग के संबंध में और ... घर के कार्यों में आदि.

... बैठने की जगह ... और सुविधाओं के लिए **बस में और रेल** में और **हवाई जहाज** में

... **स्कूल** की कक्षा में और खेल के मैदान में स्कूल के बच्चों के बीच

... **व्यापार** के दिन प्रतिदिन के लेनदेन और विभिन्न कार्यों में

... **नेताओं और राजनेताओं** के बीच और देशों के बीच पानी, भूमि आदि के लिए हुए विवादों में

जी हाँ! ज्यादातर परेशानियों और दुनिया में गड़बड़ी का **<u>मूल कारण</u>** ... स्वार्थ है।

और पापों की सूची का कोई अन्त ही नहीं ... .

यही <u>चौड़ा मार्ग</u> या "पथ" है जिसपर दुनिया के अधिकांश लोग अभी चलते आ रहे हैं और ... यह <u>विनाश</u> या .... मृत्यु की ओर ले जाता है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! यही वो **पाप** का "मार्ग" है जिसे यीशु ने बताया था "...बहुत से हैं जो उससे प्रवेश करते हैं"

इसलिए परमेश्वर की **दिव्य योजना** के चार्ट पर हम **"N" सतह** से **"R"** सतह पर "गिरने" को **चौड़े मार्ग** के रूप में देखते हैं

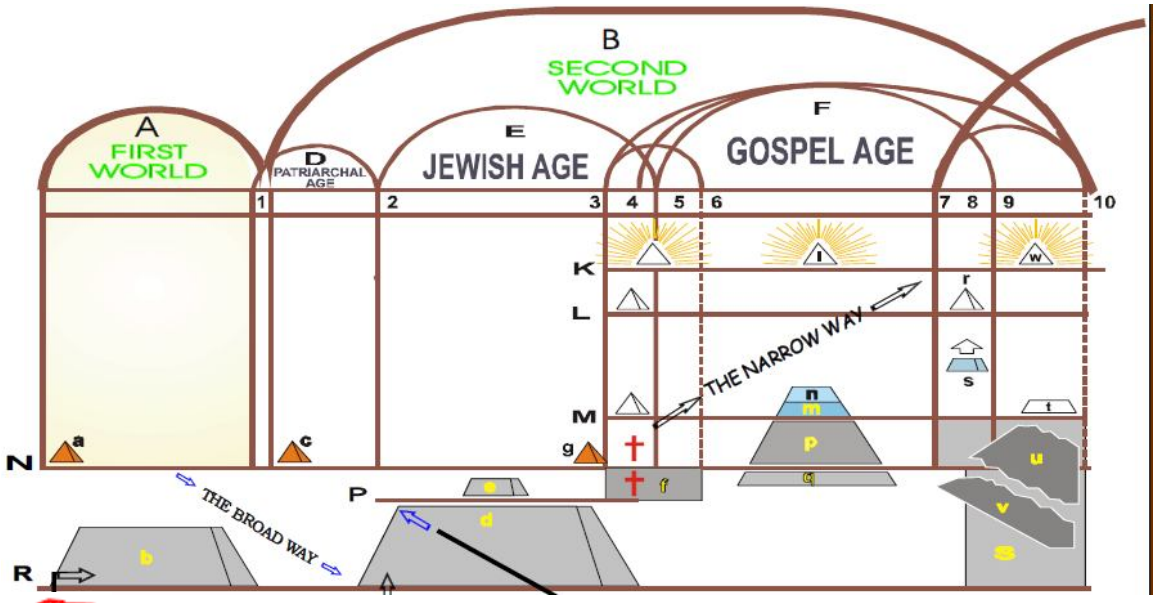

पहले और **दूसरे** संसार की पूरी दुनिया **"R"** सतह पर दिखाई गयी है। **(चार्ट में R सतह को दिखाएँ)**

यहूदियों के युग में इस्राएल को "P" सतह पर दिखाया गया है जो की **"N"** सतह के पास है। **(चार्ट में P सतह को दिखाएँ)**

पर P सतह के **नीचे इस्राएल को छाया में** वार्षिक प्रायश्चित **के दिन के बलिदानों के द्वारा मिलनेवाली आंशिक रूप से धर्मी ठहरने की एक विशेष अवस्था दिखाई गयी है**।

लेव्यव्यवस्था (Leviticus) 16:29-30 "तुम लोगों के लिये यह सदा की विधि होगी कि सातवें महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने जीव को दु:ख देना, और उस दिन कोई, चाहे वह तुम्हारे निज देश का हो चाहे तुम्हारे बीच रहने वाला कोई परदेशी हो, कोई भी किसी प्रकार का काम काज न करे; क्योंकि उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिये तुम्हारे

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

निमित्त प्रायश्चित्त किया जाएगा; और तुम अपने सब पापों से यहोवा के सम्मुख पवित्र ठहरोगे।"

इसके बाद परमेश्वर ने इस्राएल को व्यवस्था दी जिसके साथ एक वादा था, जिसके बारे में हम गलातियों 3:12 वचन में पढ़ते हैं-

गलातियों (Galatians) 3:12 "पर व्यवस्था का विश्वास से कोई सम्बन्ध नहीं; क्योंकि जो उनको मानेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।"

जी हाँ! परमेश्वर ने इस्राएल को … जीवन के **"मार्ग"** के रूप में मूसा के द्वारा **व्यवस्था** दी, लेकिन …**कोई भी** इसे प्राप्त नहीं कर सका, क्योंकि पाप में गिरे हुए और अपरिपूर्ण मनुष्य के द्वारा कभी भी परमेश्वर की **परिपूर्ण व्यवस्था** को नहीं रखा जा सकता।

गलातियों (Galatians) 2:16 "तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हम ने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें; इसलिये कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा।"

इस प्रकार पूरा इस्राएल भी मृत्यु में चला गया!

तो यह **चौड़ा मार्ग** था जो "विनाश" या मृत्यु को पहुँचाता था और यीशु के आने तक संसार और … इस्राएल दोनों के लिए **केवल** यही मार्ग खुला था।

जी हाँ! आदम से लेकर यीशु तक चौड़ा मार्ग ही सबके लिए खुला था!

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

उसके बाद **यीशु** के मृत्यु के साथ **एक नया मार्ग** खुला –

आइये इसके बारे में हम इब्रानियों 10:19, 20 वचनों में पढ़ें ...

इब्रानियों (Hebrews) 10:19, 20 "इसलिए हे भाइयो, जब हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है, जो उसने परदे अर्थात अपने शरीर में से होकर, हमारे लिये अभिषेक किया है,"

जी हाँ! यीशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा

"एक नया और **<u>जीवता मार्ग</u>**" खोला –

….. **एक मार्ग जीवन की ओर**!!!

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

आइये इसके बारे में हम मत्ती 7:14 वचन में पढ़ें -

मत्ती (Matthew) 7:14 "क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है; और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं॥"

जी हाँ! यह **नया** मार्ग था और .... यह **"जीवन"** की ओर था और यीशु ने **इस मार्ग से प्रवेश करने की सलाह दी** जिसे हम मत्ती 7:13 वचन में स्पष्ट रूप से पढ़ते हैं –

मत्ती (Matthew) 7:13 "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुत से हैं जो उस से प्रवेश करते हैं।"

यह "सकेत मार्ग" है जिसका
फाटक सकेत (छोटा और कठिन) है और जो "जीवन" को पहुँचाता है।

इसका मतलब **क्या** है? यह मार्ग **क्या** है?

और वो कौन सा "जीवन" है जिस तक ये मार्ग पहुँचाता है?

यीशु के मृत्यु पर मंदिर के **अति पवित्र स्थान** में प्रवेश करनेवाले परदे का **"फटना"** इस **सकेत मार्ग** के खुलने का **एक चिन्ह** था!

इस विषय के बारे में हम इन वचनों में पढ़ते हैं -

मत्ती (Matthew) 27:51; लूका (Luke) 23:45; मरकुस (Mark) 15:38

"और देखो, मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया: और धरती डोल गई और चटानें तड़क गईं"।

"और सूर्य का उजियाला जाता रहा, और मन्दिर का परदा बीच में फट गया"।

"और मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया"।

जी हाँ! इस मार्ग के उद्घाटन का कितना बढ़िया एक चिन्ह!

जब महायाजक **साल में एक बार** अति पवित्र स्थान में प्रवेश करते थे उसका पर्दा इतना भारी और मोटा था कि वो उनसे नहीं उठता था!

तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है

उन्हें इसके नीचे से **रेंगकर** जाना पड़ता था! और जरा कल्पना करें इतने मोटे परदे का खुद से फटना! **यह बहुत बड़े आश्चर्य की बात थी!**
आइये अब हम, पहले इस परदे के फटने के **महत्त्व** को समझते हैं, जैसा कि हम **इब्रानियों (Hebrews) 9:2-8** वचनों में पढ़ते हैं -

इब्रानियों (Hebrews) 9:2-8 "क्योंकि एक तम्बू बनाया गया, पहले तम्बू में दीवट, और मेज, और भेंट की रोटियां थी; और वह पवित्रस्थान कहलाता है। दूसरा परदे के पीछे वह तम्बू था, जो परम पवित्रस्थान कहलाता है। उसमें सोने की धूपदानी, और चारों ओर सोने से मढ़ा हुआ वाचा का संदूक और इसमें मन्ना से भरा हुआ सोने का मर्तबान और हारून की छड़ी जिसमें फूल फल आ गए थे और वाचा की पटियां थीं। उसके ऊपर दोनों तेजोमय करूब थे, जो प्रायश्चित्त के ढकने पर छाया किए हुए थे; इनका एक-एक करके वर्णन करने का अभी अवसर नहीं है। ये वस्तुएं इस रीति से तैयार हो चुकीं। उस पहले तम्बू में याजक हर समय प्रवेश करके सेवा के कार्य सम्पन्न करते हैं, पर दूसरे में केवल महायाजक वर्ष भर में एक ही बार जाता है, और बिना लहू लिये नहीं जाता; जिसे वह अपने लिये और लोगों की भूल चूक के लिये चढ़ाता है। इस से पवित्र आत्मा यही दिखाता है कि जब तक पहला तम्बू खड़ा है, तब तक पवित्रस्थान का मार्ग प्रगट नहीं हुआ"।

परमेश्वर का तम्बू जिसे बनाने की आज्ञा मूसा को मिली थी **निर्गमन (Exodus) 25:9**, इसमें एक भीतरी कमरा था .... "अति पवित्र" स्थान जो कि ... **स्वर्ग और परमेश्वर की उपस्थिति** का प्रतिनिधित्व करता था।

.... वहाँ की **शकीना रोशनी** (यहोवा का तेज) परमेश्वर की उपस्थिति को दर्शाती थी।

(इस तम्बू की विस्तार से पढ़ाई पाठ # 31 में होगी)

इस प्रकार से यही वो "मार्ग" था जिसे यीशु ने खोला था।
वह मार्ग .... <u>जो स्वर्ग की ओर ले जाता है</u>!!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! यह एक **उद्धार** है जिसके बारे में हम **इब्रानियों (Hebrews) 2:3, 4** वचनों में पढ़ते हैं--

इब्रानियों (Hebrews) 2:3,4 "तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर कैसे बच सकते हैं? जिसकी चर्चा पहले-पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ। और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, और अदभूत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा"॥

यह "मार्ग" ... "ऐसा बड़ा उद्धार" भी कहलाता है और यह **स्वर्गीय उद्धार** है जिसके बारे में प्रेरित पौलुस ने **फिलिप्पियों (Philippians) 3:14** वचन में बताया है -

फिलिप्पियों (Philippians) 3:14 "निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है"।

और **यह "जीवन"** कौन सा है जिसकी ओर **सकेत मार्ग** ले जाता है?

इसके बारे में हम **रोमियो (Romans) 2:7** वचन में पढ़ते हैं -

रोमियो (Romans) 2:7 "जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा"।

जी हाँ! जो "जीवन" प्रदान किया जाता है, यहाँ पर हम पढ़ते हैं कि ... वो **"अमरता"** है।

इसका मतलब क्या है? अमरता क्या है?

बहुतों को अमरता का अर्थ **स्पष्टता से मालूम नहीं।**

यह सोचा जाता है की सब मनुष्य **स्वभावतः** अमर हैं **क्योंकि** उनकी आत्मा **नहीं मर सकती**!

क्या बाइबल यही सिखाती है?

आइये हम इस विषय के बारे में 1 तीमुथियुस 6:16 वचन में पढ़ें....

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

1 तीमुथियुस (1 Timothy) 6:16 "और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है।... आमीन॥"

"अमरता **केवल** उसी की है"-- **यह** कौन है?

ये यीशु नहीं हो सकते क्योंकि हम यहाँ पढ़ते हैं कि - "और न उसे किसी मनुष्य ने देखा, न कभी देख सकता है" ।

जी हाँ! ये **स्वर्गीय पिता** हैं!

जी हाँ! बाइबल हमें यह सिखाती है कि **"केवल"** वही हैं जिनके पास आदि से अमरता थी ।

सभी जीवित सृष्टि नश्वर बनायी गयी है
स्वर्ग में नश्वर आत्मिक जीव हैं जबकि आदम एक नश्वर मानव था।

नश्वर वे जीव हैं जिनमें जीवन होता है लेकिन .... वे मर **सकते** हैं।

अमर वे हैं जो **कभी नहीं** मर सकते!

अमरता वह है जहाँ मृत्यु सम्भव ही नहीं है!

तो मानव जाति इनमें से क्या हैं? आइये अब हम लूका 9:60 वचन में से पढ़ें -

लूका (Luke) 9:60 "उसने उससे कहा, मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे,...।"

जी हाँ! यहाँ तक कि आदम के सारे वंश नश्वर भी नहीं माने जाते ... बल्कि वे "**मरी**" हुई अवस्था में हैं जिनके पास जीने का बिलकुल भी कोई **अधिकार** नहीं क्योंकि अदन की वाटिका में पाप में गिरने के बाद .... **सभी** **मरने** के लिए ही पैदा होते हैं!

नश्वर जीवों को जीने का अधिकार है - जैसे की स्वर्ग के दूत।

तो यीशु क्या थे? आइये हम उनके बारे में प्रकाशितवाक्य 1:18 वचन में पढ़ें -

प्रकाशितवाक्य (Revelation) 1:18 "मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूं...।"

जी हाँ! यीशु भी एक नश्वर **परिपूर्ण** मानव के रूप में क्रूस पर **मरे**, जैसा की हम मत्ती 27:50 वचन में पढ़ते हैं -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

मत्ती (Matthew) 27:50 "तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए।"

ध्यान दें: "मैं मर गया था" (प्रकाशितवाक्य 1:18 में)

लेकिन तीसरे दिन के बाद यीशु को पिता की अमरता का **अधिकार** दे दिया गया था

यूहन्ना (John) 5:26 - "... उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया ... ")

और अब वे अमर हैं, जैसा की हम प्रकाशितवाक्य 1:18 वचन में पढ़ते हैं -

प्रकाशितवाक्य (Revelation) 1:18 ⇨ "...और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूं...।"

इस विषय को समझने के बाद आइये हम एक महत्वपूर्ण विषय को 2 पतरस 1:4 वचन में पढ़ें -

2 पतरस (2 Peter) 1:4 "जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ।"

जी हाँ! इस सुसमाचार के युग में **अभी** यीशु के पीछे चलनेवालों से भी इस **"जीवन"** का **वादा किया गया** है जो की **अमरता** का **दिव्य स्वभाव** है!

यह लगभग... अविश्वसनीय लगता है!

लेकिन आइये हम इस विषय की पुष्टि दूसरे वचनों में पढ़कर करें -

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 15:53 ; प्रकाशितवाक्य (Revelation) 20:6

"क्योंकि अवश्य है कि यह नाशवान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।"

"धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहले पुनरुत्थान का भागी है। ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे॥"

इन वचनों में फिर से अमरता के उस वादे का जिक्र है

जिसे ... **पहला पुनरुत्थान** कहा जाता है,

इस अमरता के वादे का उल्लेख प्रेरित पौलुस ने भी **"मुकुट"** के रूप में किया है

..... 2 तीमुथियुस (2 Timothy) 4:8 वचन में -

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

2 तीमुथियुस (2 Timothy) 4:8 "भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है,...॥"

यही **वो वादा** है जिसे प्रेरित पौलुस ने मन में रखकर मसीहियों को यह लिखा - रोमियो (Romans) 12:1 "इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढाओ...।"

देखा! यहाँ प्रेरित पौलुस **"भाइयों"** (विश्वासियों) से **विनती** (निवेदन और अनुरोध) करते हैं कि... "अपने शरीरों को जीवित बलिदान करके चढ़ाओ"

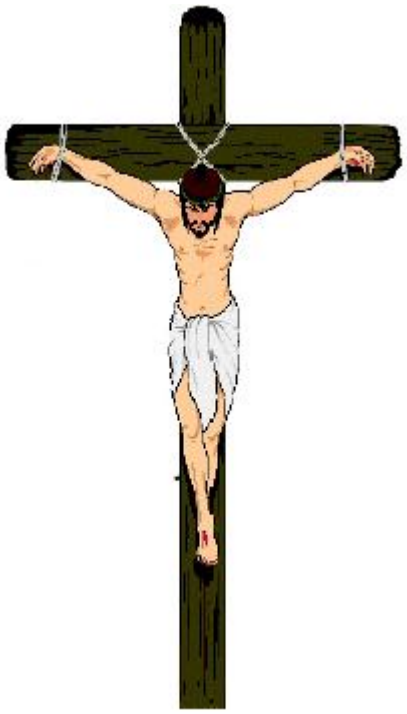

क्यों? इसका मतलब क्या है?

यह वचन यीशु के पदचिन्हों पर चलनेवालों के .... **एक बलिदान के जीवन** की बात करता है। अहा, जी हाँ! फिर से इसी विषय के बारे में हम स्प्ष्टता से इन वचनों में पढ़ते हैं -

फिलिप्पियों (Philippians) 1:29 "क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिये दुख भी उठाओ।"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

2 तीमुथियुस (2 Timothy) 2:11,12 "...यदि हम उसके साथ मर गए हैं, तो उसके साथ जीएंगे भी; यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे;..."

जी हाँ! मसीही मार्ग **सिर्फ विश्वास** के लिए नहीं है ....

बल्कि स्वामी के पीछे बलिदान में और प्राण देने तक **चलना** भी है, लेकिन हम पढ़ते हैं कि -

"**थोड़े** (मसीही) हैं .....

....**जो पाते** हैं" (इस महान **अवसर** और **विशेष अधिकार** को **समझते** हैं)

एक और जगह पर यीशु ... इस **सकेत मार्ग** के बारे में एक वाक्य में बताते हैं जिसे **बहुतों** ने स्पष्ट रूप से नहीं **समझा** है और वास्तव में **बहुतों ने गलत तक समझा** है!

जी हाँ! इन वचनों को हम मत्ती 19:24 में से पढ़ते हैं -

मत्ती (Matthew) 19:24 "तुमसे फिर कहता हूं कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।"

यह वचन दूसरी जगह भी दोहराया गया है -

मरकुस (Mark) 10:25 और **लूका (Luke) 18:25**

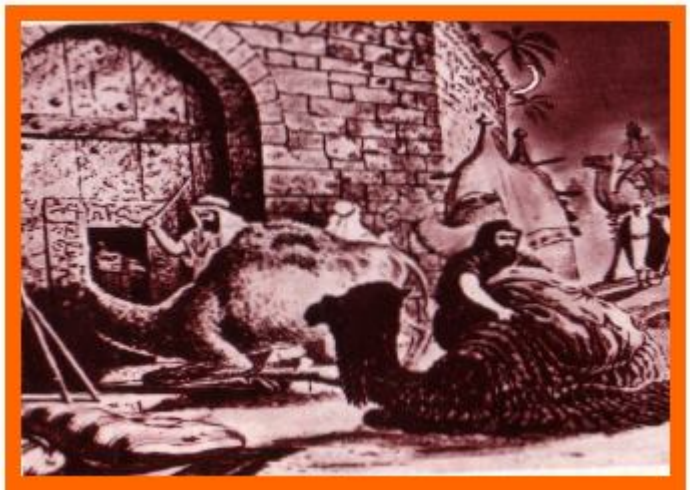

इसका मतलब क्या है?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

यदि इसे **साधारण** भाषा में लिया जाये तो **यह विचार करने** के लिए भी **एकदम बेतुका** है!

लेकिन बाइबल के कुछ **आलोचक** हैं जो इस वचन को अन्य वचनों के साथ प्रस्तुत करते हैं और इसे एक उदाहरण के तौर पर उपयोग करके यीशु की **शिक्षाओं** को **निराधार** और **झूठा** दर्शाते हैं!!!

तो वास्तव में इसका मतलब क्या है?

हमें अवश्य ये याद रखना चाहिए कि यीशु के शब्दों में, **दृष्टान्तिक** प्रकृति होने के अलावा अपने **आसपास दिखनेवाली** जगहों और वस्तुओं को भी उन्होंने **अपनी शिक्षाओं** में उपयोग किया है।

यह **वैसा ही एक उदाहरण** है!

हम ऐसे ही बहुत से उदहारण आने वाले पाठों में देखेंगे!

यहाँ पर ... "सुई की नोक" शब्दों से यीशु का मतलब क्या था?

यहाँ पर यीशु यरूशलेम के मुख्य द्वार के भीतर एक "द्वार" की बात कर रहे

ऐसा हुआ कि जब मुख्य द्वार **सूर्यास्त** के बाद **बंद कर दिया जाता था**, लौट रहे **व्यापारीयों** और **व्यवसायियों** को

.... उनके ऊंट (उनके परिवहन के वाहनों) **से उतरना** पड़ता था

.... और जो माल और सामान वे लिए हुए थे उसका भार **उतारना** पड़ता था

..... और फिर **ऊंट को झुकाकर** उस द्वार से प्रवेश कराना पड़ता था

.... और फिर उन्हें **खुद** माल को उस द्वार के माध्यम से **उठाकर** ले जाना पड़ता था,

... और अंत में वे ऊंटों पर **फिर से सामान चढ़ाकर** आगे बढ़ जाते थे!!

जी हाँ! यही **वह रास्ता** था प्रवेश करने का

"सुई की नोक" और यीशु इसी कठिनाइयों की बात कर रहे थे।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! जब **अमीर आदमी** द्वार के पास आया हो, हो सकता है कि उसने सोचा हो कि यह **असंभव** था, लेकिन ....

... **यद्यपि यह मुश्किल था** ... **पर फिर भी संभव था!**

ऐसे ही यीशु के पीछे **सकेत मार्ग** पर चलना **बहुतों** को **असम्भव** लगता है लेकिन ....

.... **यह <u>सचमुच</u> में संभव है,..नहीं तो परमेश्वर ऐसा बुलावा नहीं भेजते**!!

हम इस **विशेष** मसीही बुलावे और "**जीवन के चाल -चलन**" की अधिक जानकारी का अध्ययन आगे के पाठों में करेंगे **(पाठ # 17, 18 और 19 में)** ।

तो प्रिय भाइयों यही महान महिमा की ओर जानेवाला <u>सकेत मार्ग</u> है!

आइये अब हम **तीसरे मार्ग** पर आते हैं! क्या सचमुच में एक तीसरा मार्ग है?

ये कौनसा **मार्ग** है? आइये हम देखते हैं -

हमने यह देखा की **चौड़ा मार्ग (चार्ट पर इसे दिखाएँ)** या पाप के मार्ग पर चल रही पूरी दुनिया **"विनाश"** या मृत्यु तक पहुँची।

क्या यही पूरी मानव जाति का अंत है?

क्या सम्पूर्ण मानव जाति में से ... जिन्होंने यीशु के बारे में **<u>कभी नहीं</u>** सुना या ...उन पर **<u>कभी नहीं</u>** विश्वास किया, उनके लिए **कोई आशा** नहीं?

क्या यीशु <u>पूरी जगत के उद्धारकर्ता</u> नहीं?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

आइये इसके बारे मैं हम स्पष्टता से 1 यूहन्ना 2:2 वचन में पढ़ें -

1 यूहन्ना (1 John) 2:2 "और वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त है, और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी।"

जी हाँ! यीशु के कलवरी के क्रूस पर मृत्यु ने केवल "हमारे"- **कलीसिया के** पापों के लिए थी

...**बल्कि सारे जगत के पापों के लिए भी थी!**

और यह हम स्प्ष्टता से 1 तीमुथियुस 2:6 वचन में पढ़ते हैं-

1 तीमुथियुस (1 Timothy) 2:6 "जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया, ताकि उसकी गवाही ठीक समय पर दी गई।"

जी हाँ! यीशु ने अपने जीवन का बलिदान मृत्यु से छुटकारे के दाम में सब के लिए दिया!

तो इस प्रकार से हमें **दुनिया के लिए भी** एक उद्धार की उम्मीद अवश्य करनी चाहिए! **है कि नहीं?**

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! दुनिया का उद्धार

...तीसरा मार्ग है

जिसे अब हम देखकर परिचित होंगे!

दुनिया का वह उद्धार कैसा होगा?

आइये इसके बारे में हम यशायाह 35:8 वचन में पढ़ें -

यशायाह (Isaiah) 35:8 “वहां एक सड़क अर्थात राजमार्ग होगा, उसका नाम पवित्र मार्ग होगा: कोई अशुद्ध जन उस पर से न चलने पाएगा, वह तो उन्हीं के लिये रहेगा और उस मार्ग पर जो चलेंगे वे चाहे मूर्ख भी हों तौभी कभी न भटकेंगे।”

जी हाँ! इस **तीसरे मार्ग** को **राजमार्ग** कहते हैं!

यह मार्ग **"अशुद्ध जन"** के लिए है -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

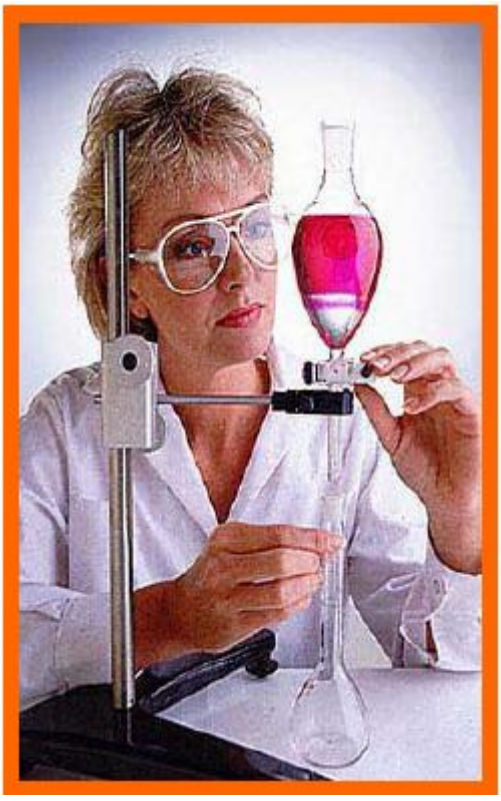

जी हाँ! यह **पापियों** के प्रति एक संकेत है!

<u>असहाय होकर पाप के प्रभाव</u> में पड़ी मानव जाति की दुनिया।

लेकिन ये **"मुर्ख" कौन** हैं?

आइये हम वचन में पढ़ के देखते हैं -

भजन संहिता (Pslams) 14:1 "मूर्ख ने अपने मन में कहा है, "कोई परमेश्वर है ही नहीं"...।

जी हाँ! "मुर्ख लोग" **दुनिया के महान विद्वानों** और **वैज्ञानिकों में से हैं!**

वे जो खुलेआम यह दावा करते हैं की

ब्रह्माण्ड का कोई **निजी सृष्टिकर्ता नहीं** है

और ... यह की **परमेश्वर करके कोई है ही नहीं**

बल्कि यह कि बहुत पहले अतीत में **<u>कुछ परिस्थितियों के कारण</u>** सारी सृष्टि ने जगह ले ली और अस्तित्व में आ गयी।

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! "महा विस्फोट का सिद्धांत" (The Big Bang Theory)!

जी हाँ! वास्तव में ये ही "मुर्ख" हैं जो **राजमार्ग** पर कभी न **भटकेंगे** और न **गलती करेंगे** और तब वे **बुद्धि प्राप्त** करने में न भटकेंगे क्योंकि हम पढ़ते हैं कि -

यशायाह (Isaiah) 29:24 "उस समय जिनका मन भटका हो वे बुद्धि प्राप्त करेंगे, और जो कुड़कुड़ाते हैं वे शिक्षा ग्रहण करेंगे॥"

आइए अब हम इस मार्ग के बारे में और जानने के लिए यशायाह 35:9 वचन को पढ़ें .....

यशायाह (Isaiah) 35:9 "वहां सिंह न होगा...।"

क्या इस वचन में जानवर को सम्बोधित किया गया है?

तब क्या **कोई सिंह नहीं** होगा?

यह कितने दुख की बात होगी!

क्योंकि सिंह कितना सुंदर और अद्भुत जानवर है!

यहाँ तक की वो... सभी जंतुओं का राजा है!

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

कितने लोग उतावले होकर चिड़ियाघर में सिंह को देखने के लिए जाते हैं!

तो **क्या** यह वचन **साधारण** भाषा में है?

नहीं! इस वचन में जिस "सिंह" का वर्णन किया गया है उसके बारे में 1 पतरस 5:8 वचन में हम पढ़ते हैं -

1 पतरस (1 Peter) 5:8 "...क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान...।"

जी हाँ! यह **शैतान** है जिसे "सिंह" कहकर सम्बोधित किया गया है!!!

अहा! यह वचन हमें ये हक़ीक़त बतलाता है कि उस समय शैतान को... **बाँध** दिया जायेगा ताकि वो लोगों को न **बहकाए**, जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 20:3 वचन में पढ़ते हैं -

प्रकाशितवाक्य (Revelation) 20:3 "और उसे अथाह-कुंड में डालकर बन्द कर दिया और उस पर मुहर लगा दी कि वह हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए...॥"

जी हाँ! देखा! शैतान यानि "सिंह" को **बांध दिया जायेगा** और **उसे लोगों को बहकाने नहीं दिया जायेगा**।

तो हम यशायाह 35:9, 10 वचनों में आगे पढ़ते हुए क्या देखते हैं -

यशायाह (Isaiah) 35:9, 10 "... कोई हिंसक जन्तु उस पर न चढ़ेगा...॥"

ये सब क्या हैं? इन सबका मतलब क्या है?

हमने देखा कि **"सिंह"** शैतान को दर्शाता है - उसी तरह ये **"हिंसक जंतु"** भी **शैतान के नियंत्रण** में अवश्य उसी से सम्बंधित कुछ दर्शाते होंगे क्योंकि सिंह सभी जन्तूओं का **राजा** है!

जी हाँ! यह शैतान की सभी **प्रणालियों** और बुराई के **स्रोतों** को दर्शाता है - शराब-घर, जुआ घर, वेश्या वृत्ति, बहकानेवाले सिनेमा और टीवी आदि आदि।

यह सब मिलकर पाप के मार्गों में ले जाते हैं और धीरे धीरे **विनाश** (मृत्यु) को लेकर आते हैं।

इनके बारे में हम क्या पढ़ते हैं?

जी हाँ! "...न वहाँ पाया जायेगा..."

जी हाँ! उस मार्ग में, पाप और प्रलोभन के ये सभी स्रोत मौजूद नहीं होंगे!!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

यह एक नयी सांसारिक व्यवस्था होगी!

जी हाँ! आइये हम यशायाह 35:9, 10 वचनों को पढ़ना जारी रखें -

यशायाह (Isaiah) 35:9, 10 "... परन्तु छुड़ाए हुए उसमें नित चलेंगे और यहोवा के छुड़ाए हुए लोग...॥

यहाँ पर हम पढ़ते हैं कि "यहोवा के छुड़ाए हुए लोग" लौटेंगे!!

इसका मतलब क्या है?

अहा, जी हाँ! यहाँ पर **"यहोवा के छुड़ाए हुए लोग"** मानवजाति की दुनिया को दर्शाते हैं जो तब वहाँ से लौटेंगे **"जहाँ वे गए थे"**!!

पूरी दुनिया कहाँ गयी थी?

हमने पहले पढ़ा कि पूरी दुनिया **चौड़े मार्ग** पर चलती थी जो "विनाश" यानि **मृत्यु** को लेकर जाता है, लेकिन अब यीशु की छुड़ौती के बलिदान के **अनुग्रह** के द्वारा वे

"मरे हुओं में से जाग उठने" (दानिय्येल 12:2) के द्वारा **लौट** आएंगे।

क्योंकि हम यह पढ़ते हैं कि...**तब** वो समय होगा जब **सब फिर से जिलाए जायेंगे**, जैसा कि हम 1 कुरिन्थियों 15:22 वचन में पढ़ते हैं -

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 15:22 "...वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे।"

जी हाँ! इस प्रकार **सभी** का पुनरुत्थान होगा जैसा कि प्रेरित पौलुस इस विषय की पुष्टि करते हुए हमें प्रेरितों 24:15 वचन में बताते हैं -

प्रेरितों (Acts) 24:15 "...कि धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा।"

जब हम मानवजाति के लिए परमेश्वर की इच्छा 1 तीमुथियुस 2:3, 4 वचन में पढ़ते हैं, इस बात की पुष्टि हो जाती है -

1 तीमुथियुस (1 Timothy) 2:3, 4 "... जो यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, और वे सत्य को भली भांति पहचान लें।"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! यह परमेश्वर की **इच्छा** है! **और निश्चय ही यह पूरी होगी।**

वह महिमामय और अदभुत दिन बहुत दूर नहीं!

अब **"उद्धार"** का क्या मतलब है?

यदि बाइबल की भाषा के अनुसार उचित रीती से समझा जाये तो यह **मृत्यु** से बचने को दर्शाता है!

यह वचन **मानवजाति के उद्धार** के **<u>दो चरणों की प्रक्रिया</u>** को दर्शाता है -

<u>पहला</u> ... **मृत्यु** से छुटकारा

.... और फिर **<u>दूसरा</u>** ...जिलाए गए लोगों को फिर **उनकी पापी अवस्था** से अवश्य छुटकारा दिलाना होगा।

इस प्रकार से "सब" को सभों के पुनरुत्थान के द्वारा मृत्यु से बचाया जायेगा और फिर वे -

"<u>सत्य को भली भाँति</u> पहचान "लेंगे

पुनरुत्थान का यह महान **आश्चर्य** कैसे होगा?

आइये हम वचन से पढ़ते हैं -

लूका (Luke) 13:29, 30 “और पूर्व और पच्छिम; उत्तर और दक्खिन से लोग आकर परमेश्वर के राज्य के भोज में भागी होंगे। और देखो, कुछ पिछले हैं वे पहले होंगे, और कुछ जो पहले हैं, वे पिछले होंगे॥”

मरे हुओं का पुनरुत्थान **कैसे** होगा उसका **रहस्य** यहाँ है!!

.... कुछ पिछले हैं **(मरने को)** वे पहले होंगे **(मरे हुए में से जी उठने को)**

..... और कुछ जो पहले हैं **(मरने को)** वे पिछले होंगे **(मरे हुए में से जी उठने को)**

वास्तव में! वहाँ एक **क्रम** होगा!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

पुनरुत्थान के समय में जो **पीढ़ी अंतिम** में मरेगी वो **जी उठने वालों में पहली** होगी ... जबकि जो **पीढ़ी आरम्भ** में मरी होगी (आदम और उसकी पीढ़ी) वो **जी उठने वालों में आखरी होगी!!**

यह इसीलिए होगा ताकि लोग ज्ञात परिवार, रिश्तेदारों और दोस्तों की संगती में राज्य के हालातों से **अभ्यस्त हो पाएँ** और **ठीक से जम** जाएँ।

मरे हुओं में से जी उठने के बाद उस व्यक्ति की हालत और उसका शरीर ठीक वैसा ही होगा जैसा मृत्यु के समय था ...**मानसिक** और **शारीरिक** दोनों रूप में!!

वहाँ बिल्कुल …. कोई परिवर्तन नहीं होगा!

हमें इसकी पुष्टि अय्यूब 19:26, 27 वचनों में मिलती है -

अय्यूब (Job) 19:26, 27 "और अपनी खाल के इस प्रकार नष्ट हो जाने के बाद भी, मैं शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊंगा। उसका दर्शन मैं आप अपनी आंखों से अपने लिये करूंगा, और कोई दूसरा नहीं...!"

कृपया इन शब्दों पर **ध्यान** दें - "उसका दर्शन मैं आप अपनी आँखों से अपने लिए करूँगा, और कोई दूसरा नहीं"

जी हाँ! **व्यक्तित्व में कोई भी परिवर्तन नहीं होगा!**

इसलिए अवश्य इसके बाद **पाप से छुटकारा पाना होगा!** इसे कैसे पूरा किया जाएगा?

इसका उत्तर हम यूहन्ना 17:17 वचन में पढ़ते हैं -

यूहन्ना (John) 17:17 "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है।"

जी हाँ! पाप के मार्गों से **पवित्र** करना या **शुद्ध** करना **सत्य** की सामर्थ्य से ही संभव है!

इस प्रकार से **सब** "सत्य को भली भाँति पहचान" लेंगे।

यह कैसे किया जायेगा? **पहला** चरण यह होगा, जिसके बारे में हम **यशायाह 29:18; 32:3** वचनों में पढ़ते हैं-

यशायाह (Isaiah) 29:18 "उस समय बहिरे पुस्तक की बातें सुनने लेगेंगे, और अन्धे जिन्हें अभी कुछ नहीं सूझता, वे देखने लेगेंगे।"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

☞ यशायाह (Isaiah) 32:3 "उस समय देखनेवालों की आंखें धुंधली न होंगी, और सुननेवालों के कान लगे रहेंगे।"

यह वचन निश्चय ही **शारीरिक** आँखों या कानों के बारे में **नहीं** बात कर रहा!

यह हमें सिखाता है कि कैसे **पूरे** संसार की समझ की **"आँखें"** और **"कानों"** को शैतान के **अंधे** कर देने वाले प्रभाव से **खोला जाएगा**!

जी हाँ! झूठे उपदेशों, अंधविश्वासों, आदि को समझने के लिए पूरे संसार को इस अंधेपन से मुक्त किया जाएगा और वे **परमेश्वर** की सच्चाई को **पहचानेंगे** जो बाइबल में है जिसे वे कुछ कारणों से पहले नहीं देख पाए, जैसा कि हम 2 कुरिन्थियों 4:4 में पढ़ते हैं -

2 कुरिन्थियों (2 Corinthians) 4:4 "...जिन की बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है...।"

जी हाँ! शैतान ने **धोखे** और **झूठ** से उनके दिमाग को **अंधा** कर दिया!

जी हाँ! फिर हम **सत्य के उँड़ेले जाने** के बारे में हबक्कूक 2:14 वचन में पढ़ते हैं -

हबक्कूक (Habakkuk) 2:14 "क्योंकि पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी... ॥"

जी हाँ! वचन यानि **सत्य पूरे संसार में चारों** ओर फ़ैल जायेगा।

☞ **आप पूछ सकते हैं कैसे?**

संचार के माध्यम के द्वारा जिन्हें आज हम अपनी आँखों के सामने देखते हैं -

➡ **टीवी**, रेडियो, पिक्चर, किताबें, इंटरनेट, कंप्यूटर आदि।

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

इसलिए यह **राजमार्ग** "पवित्र मार्ग" यानि....**परिपूर्णता की ओर जाने का मार्ग** कहलाता है!!

इस प्रकार धीरे-धीरे मृत्यु और अज्ञान
...पूरी तरह से सभी लोगों में से निकाल दिया जाएगा!!

इसी के बारे में हम यशायाह 25:7 वचन में पढ़ते हैं -

यशायाह (Isaiah) 25:7 "और जो पर्दा सब देशों के लोगों पर पड़ा है, जो घूंघट सब जातियों पर लटका हुआ है, उसे वह इसी पर्वत पर नष्ट करेगा।"

इसका मतलब क्या है? ये चिन्ह हैं और वो ये प्रकट करते हैं -

["पर्दा"**]**

यह **पूरी मानवजाति** के ऊपर **आदम से आयी वंशागत मृत्यु** के पर्दे को प्रकट करता है।

जी हाँ! "जैसे आदम में सब मरते हैं..." और फिर हम पढ़ते हैं -

["घूँघट"**]** के बारे में

यह **पूरे मानवजाति** के **समझ की आँखों को अँधा** करने को प्रकट करता है, जैसा की हम इन वचनों में पढ़ते हैं -

यशायाह (Isaiah) 60:2 "देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है;...।"

2 कुरिन्थियों (2 Corinthians) 4:4 "और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।"

और वहाँ इस **राजमार्ग** में **आज्ञापालन** करने के लिए कई **प्रोत्साहन** होंगे-- जैसा कि हम अय्यूब 33:24, 25 वचनों में पढ़ते हैं -

अय्यूब (Job) 33:24, 25 "...उस मनुष्य की देह बालक की देह से अधिक स्वस्थ और कोमल हो जाए; उसकी जवानी के दिन फिर लौट आएं।"

अहा! जी हाँ! यह वचन एक सबसे अदभुत बात बताता है...जिसकी **कल्पना** मनुष्य ने **बिल्कुल नहीं** की होगी!

विनाशकारी उम्र बढ़ने की प्रक्रिया का उलट जाना!!

जी हाँ! उस समय लोग दिन पर दिन बूढ़ेपन से **जवानी** की ओर **जाएंगे**!

अहा! जी हाँ! वे हर दिन <u>उम्र में छोटे होते</u> जायेंगे!!

सफ़ेद बाल **काले हो** जायेंगे! ..... झुर्रियों वाली चमड़ी **चिकनी हो** जाएगी! कमजोरी **ताकत में बदल** जाएगी! ..... गिरे हुए दांत **वापस आना शुरू हो** जायेंगे! **परीपूर्णता** के प्रकट होने से धीरे-धीरे सारी अपरीपूर्णता मिट जाएगी!

फिर तब एक बहुत उदार **परीक्षा की अवधि** भी होगी!

जिसके बारे में हम यशायाह 65:20 वचन में पढ़ते हैं -

यशायाह (Isaiah) 65:20 "...क्योंकि जो लड़कपन में मरने वाला है वह सौ वर्ष का होकर मरेगा, <u>परन्तु पापी सौ वर्ष का होकर श्रपित ठहरेगा</u>।"

जी हाँ! **सभी** को **<u>100 साल की परीक्षा की अवधि</u>** पाप के मार्गों से **<u>पश्चाताप</u>** करने और सुधरने के लिए दी जाएगी।

इसके बारे में जरा सोचें!!

आज किसी का जीवनकाल भी इतने सालों तक नहीं पहुंचता!!

पूरी मानवजाति को पाप के मार्गों से **<u>पश्चाताप</u>** करने को प्रोत्साहित करने के लिए परमेश्वर ने **कितनी लम्बी अनुग्रह की अवधि रखी** है!

अहा! उस समय क्या **अपनी इच्छा से आज्ञा न माननेवाले लोग** होंगे?

इसका उत्तर हम यशायाह 26:10 वचन में पढ़ते हैं -

यशायाह (Isaiah) 26:10 "दुष्ट पर चाहे दया भी की जाए तौभी वह धर्म को न सीखेगा; <u>धर्मराज्य में भी</u> वह कुटिलता करेगा...॥"

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! परमेश्वर के अनुग्रह और करुणा के बावजूद भी .... **कुछ** ऐसे होंगे!

ये अपने बुराई के तरीकों से **पश्चाताप** या सुधार **<u>करना नहीं</u> चाहेंगे**।
जी हाँ! **वे...परमेश्वर...और धार्मिकता के शत्रु** बनकर शैतान के मार्ग को अपना लेंगे।

लेकिन बाकि सब के बारे में हम क्या पढ़ते हैं? आइये हम यशायाह 35:10 वचन से पढ़ें-

यशायाह (Isaiah) 35:10 "यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन में आएंगे, और उनके सिर पर सदा का आनन्द होगा; वे हर्ष और आनन्द पाएंगे और शोक और लम्बी सांस का लेना जाता रहेगा॥"

और फिर से एक और वचन में पढ़ें .....

भजन संहिता (Psalms) 22:27, 28 "पृथ्वी के सब दूर-दूर देशों के लोग उसको स्मरण करेंगे और उसकी ओर फिरेंगे; और जाति जाति के सब कुल तेरे सामने दण्डवत करेंगे। क्योंकि राज्य यहोवा ही का है, और सब जातियों पर वही प्रभुता करता है॥"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! सब (अधिकांश लोग) परमेश्वर यहोवा की ओर फिरेंगे और आज्ञाकारी होंगे और दण्डवत (आराधना) करेंगे!

यह तीसरा मार्ग...राजमार्ग...कब खुलेगा?

हम इसका उत्तर 1 कुरिन्थियों 15:23 वचन में पढ़ते हैं -

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 15:23 "परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से: पहला फल मसीह, फिर मसीह के आने पर उसके लोग।"

जी हाँ! मसीह का **दूसरा आगमन** ... **इस राजमार्ग को खोलेगा**।
हमारे प्रभु यीशु राजमार्ग के बारे में अपने पहले आगमन में **बात नहीं करते** क्योंकि तब वे ... **दूसरे मार्ग** को खोलने आये थे

सकेत मार्ग जो **बहुत बड़े स्वर्गीय उद्धार** की ओर ले जाता है...
...पर अपने दूसरे आगमन में वे **तीसरे मार्ग** को खोलने आएंगे

राजमार्ग

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

<u>पूरी मानवजाति के उद्धार का मार्ग</u> जो कि उन्हें उस मानवीय परिपूर्णता की ओर वापस ले जायेगा जिसमें परमेश्वर ने **<u>पहले</u>** आदम की सृष्टि की थी।

जी हाँ! **पवित्र आत्मा** के अनुग्रह से आज हमें इस **तीसरे मार्ग** को समझने का मार्गदर्शन वचनों से मिला क्योंकि अब हम

➡ ..... प्रभु के दूसरे आगमन और

➡ ..... **<u>इस मार्ग के खुलने</u>!**

के बहुत करीब हैं!

और प्रिय भाइयों और बहनों, यही बाइबल के **"तीन मार्ग"** थे!!

--आमीन--

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com